पाठ 8

दिव् गण की धातुए और कृ धातु के वर्तमान काल (लट् लकार) के रूप, संधि के कुछ नियम, संस्कृत के तीन श्लोक, एक पत्र.

8.1 क्रि. दिव्-गण की धातुएँः धातुओं के चौथे गण का नाम **दिव्** (चमकना) धातु के नाम पर **दिवादिगण** (दिव्-गण) है। **पुष्** (पोषण करना) धातु **दिव्** गण की है। इस गण की धातुओं के अंग बनाने के लिए धातु के साथ **य** जोड़ा जाता है। इस प्रकार **पुष्** से **पुष्य** बन जाता है। लट् लकार के रूप बनाने के लिए **भू**-गण के ही अन्त्य प्रत्यय लगते हैं और उसके ही नियम लागू होते हैं (देखिए अनुभाग 5.2)। **पुष्** धातु के लट् लकार के रूप नीचे दिए गए हैं-

	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
प्रथम पुरुष	(सः)	**पुष्यति**	(तौ)	**पुष्यतः**	(ते)	**पुष्यन्ति**
मध्यम पुरुष	(त्वम्)	**पुष्यसि**	(युवां)	**पुष्यथः**	(यूयं)	**पुष्यथ**
उत्तम पुरुष	(अहं)	**पुष्यामि**	(आवां)	**पुष्यावः**	(वयं)	**पुष्यामः**

दिव्-गण की कुछ धातुएँ नीचे दी गई हैं। अनियमित धातुएँ तारांकित हैंः

नृत्	नाचना	**(नृत्यति)**	**तृप्**	तृप्त होना	**(तृप्यति)**
नश्	नष्ट होना	**(नश्यति)**	**पुष्**	पुष्ट होना	**(पुष्यति)**
मुह्	मोहित होना	**(मुह्यति)**	**स्निह्**	प्यार करना	**(स्निह्यति)**
सिध्	सिध्द होना	**(सिध्यति)**	**तुष्**	प्रसन्न होना	**(तुष्यति)**
लुभ्	लोभ करना	**(लुभ्यति)**	***शम्**	शांत होना	**(शाम्यति)**
कुप्	क्रोध करना	**(कुप्यति)**	***श्रम्**	थक जाना	**(श्राम्यति)**

उपर्युक्त धातुओं के लट् लकार के रूपों का अभ्यास आगे दिए गए **नृत्** के रूपों की तरह सर्वनाम कर्ताओं के साथ कीजिएः

सः नृत्यति, तौ नृत्यतः, ते नृत्यन्ति; त्वं नृत्यसि, युवां नृत्यथः, यूयं नृत्यथ; अहं नृत्यामि, आवां नृत्यावः, वयं नृत्यामः।

8.2 प. नीचे दिए गए वाक्यों को बोलकर पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. दुग्धेन अस्माकं शरीराणि पुष्यन्ति। 2. फलैः अपि अस्माकं शरीराणि पुष्यन्ति। 3. अस्माकं माता अस्मभ्यं दुग्धं यच्छति। 4. सा कदापि अस्मभ्यं न कुप्यति। 5. प्रसन्नाः बालिकाः नृत्यन्ति। 6. क्रोधः[1] क्रोधेन न शाम्यति। 7. अक्रोधेन एव क्रोधः शाम्यति। 8. एतत् बुध्दस्य वचनम्[2]। 9. उद्यमेन कार्यं सिध्यति। 10. ते बालकाः अतीव क्रीडन्ति, अतः ते श्राम्यन्ति। 11. श्वः[3] उत्सवः अस्ति। 12. जनाः[4] मन्दिरं गच्छन्ति। 13. पापेन मनुष्यः नश्यति। 14. पुण्यं मनुष्यं रक्षति। 15. पापं दुःखाय

भवति। 16. पुण्यं सुखाय भवति। 17. मनुष्यः धनेन कदापि न तृप्यति। 18. छात्राणाम् उद्यमेन अध्यापकाः तुष्यन्ति।

(**शब्दार्थः**—1. गुस्सा, 2. कहना है, 3. कल (आने वाला), 4. लोग)

8.3 क्रि. कृ (करना) **तन्-गण** की धातु है। इस गण के रूप हम बाद में सीखेंगे। पर क्योंकि **कृ** धातु का प्रयोग बहुत अधिक होता है इसलिए हम इस धातु के लट् लकार के रूप यहाँ दे रहे हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**करोति**	**कुरुतः**	**कुर्वन्ति**
मध्यम पुरुष	**करोषि**	**कुरुथः**	**कुरुथ**
उत्तम पुरुष	**करोमि**	**कुर्वः**	**कुर्मः**

8.4 प. नीचे के वाक्यों को बोलकर पढ़िए और उनका हिंदी में अनुवाद कीजिएः

1. अहम् अधुना भोजनं करोमि। 2. त्वमद्य किं करोषि? 3. अहम् अद्य तैः बालकैः सह क्रीडामि। 4. सः स्वभावेन शान्तः। 5. सः क्रोधं न करोति। 6. तस्य भ्राता सदा क्रोधं करोति। 7. सा अधुना किं करोति? 8. सा भोजनं पचति। 9. यूयम् अद्य किं कुरुथ? 10. वयम् अद्य ताभिः बालिकाभिः सह मन्दिरं गच्छामः। 11. वयं यदा पापं कुर्मः तदा दुःखम् अनुभवामः। 12. मनुष्याः यदा पुण्यं कुर्वन्ति तदा सुखम् अनुभवन्ति। 13. अहमपि यदा पुण्यं करोमि तदा सुखम् अनुभवामि। 14. यदा पापं करोमि तदा दुःखम् अनुभवामि। 15. युवाम् अधुना किं कुरुथ? 16. आवाम् अधुना पाठं पठावः।

8.5 संधि. तीन प्रकार की संधियाँ. संस्कृत में जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती हैं तो उनमें कुछ परिवर्तन हो जाता है इसे **संधि** कहते हैं। संधि का शाब्दिक अर्थ जोड़ना है। इसके नियमों का थोड़ा-सा परिचय आप इससे पूर्व पा चुके हैं। जब संधि में मिलनेवाली दोनों ध्वनियाँ स्वर होती हैं तो हम उसे **स्वर संधि** कहते हैं। जब संधि में मिलने वाली एक या दोनों ध्वनियाँ व्यंजन होती है तो उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं और जब संधि में विसर्ग के साथ अन्य ध्वनि मिलती है तो उसे **विसर्ग संधि** कहा जाता है। अब हम **स्वर संधि** का एक नियम और **विसर्ग संधि** के दो नियम सीखेंगेः

(क) स्वर संधि. जब **ए, ऐ, ओ, औ** को छोड़कर किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद वही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ स्वर हो जाता है। इसे **सवर्ण दीर्घ संधि** कहते हैं, जैसेः

न	**+**	**अस्ति**	**=**	**नास्ति**	**(अ + अ = आ)**
कुत्र	**+**	**अपि**	**=**	**कुत्रापि**	**(अ + अ = आ)**
मम	**+**	**आत्मा**	**=**	**ममात्मा**	**(अ + आ = आ)**
अस्ति	**+**	**ईश्वरः**	**=**	**अस्तीश्वरः**	**(इ + ई = ई)**
कदा	**+**	**अपि**	**=**	**कदापि**	**(आ + अ = आ)**

(ख) विसर्ग संधि. i) यदि विसर्ग से पहले **अ** हो और उसके बाद कोई घोष व्यंजन हो तो विसर्ग के स्थान पर **ओ** हो जाता है, जैसेः—

बालकः + गच्छति = बालको गच्छति

प्रसन्नः + भवति = प्रसन्नो भवति।

टिप्पणी:—घोष वर्ण. पाँचों वर्गों के अन्तिम तीन व्यंजन, **ग, घ, ङ, ज, झ ञ, ड ढ ण, द ध न, ब भ म, य, र, ल, व** और **ह** घोष व्यंजन हैं, शेष व्यंजन अघोष हैं। सब स्वर भी **घोष** हैं।

ii) जब विसर्ग से पहले **अ** हो और बाद में भी **अ** हो तो **अः** के स्थान पर **ओ** हो जाता है तथा बाद वाले **अ** का लोप हो जाता है, और उसके स्थान पर अवग्रह (ऽ) चिह्न का प्रयोग होता है, जैसेः

कः + अत्र = कोऽत्र

मनुष्यः + अस्ति = मनुष्योऽस्ति

iii) **विसर्ग संधि** के ये दो नियम **सः** और **एषः** पर लागू नहीं होते। जब इन दो सर्वनामों के बाद **अ** के सिवाय कोई भी स्वर या व्यंजन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

सः + शिक्षकः = स शिक्षकः

एषः + मनुष्यः = एष मनुष्यः, किन्तु

सः + अत्र = सोऽत्र

8.6 अ. नीचे दिए गए शब्दों में संधि कीजिए-

1.	कदा	+ अपि	**6.**	बालकः	+ गच्छति
2.	प्रसन्नः	+ अस्मि	**7.**	कस्य	+ अयम्
3.	किम्	+ अपि	**8.**	तव	+ अपमानः
4.	मम	+ अपि	**9.**	छात्रः	+ अस्ति
5.	न	+ अस्ति	**10.**	परिचितः	+ देशः

टिप्पणी: 1. शब्दों के निर्माण में, समासों में और क्रियाओं के साथ उपसर्गों के योग में संधि आवश्यक है, दूसरे स्थलों पर इसका प्रयोग वैकल्पिक है; जैसेः **विद्या + आलयः = विद्यालयः, भो + अ + ति = भवति** आदि में संधि आवश्यक है किन्तु **बालकः गच्छति** और **बालको गच्छति** दोनों ही रूप ठीक हैं। अधिकांश संस्कृत ग्रंन्थों में संधि के नियमों का सर्वत्र पालन किया जाता है। इसके कारण संस्कृत के नए छात्रों को कुछ कठिनाई होती है। हम इन पाठों में संधि का प्रयोग छात्रों की सुविधा की दृष्टि से करेंगे। आप स्वयं संस्कृत के वाक्य लिखते हुए संधि का प्रयोग न भी करें तो कोई हानि नहीं।

2. **संधि**— संस्कृत व्याकरण में **बालक** से **बालकानाम्, भू** से **भवति** आदि

रूप पाणिनि के व्याकरण के नियमों के अनुसार सिध्द किए जाते हैं। इन शब्दों के निर्माण में होने वाली संधि आंतरिक संधि कहलाती है और वह अनिवार्य होती है। दो शब्दों के बीच होने वाली संधि- **कुत्रापि, बालको गच्छति** आदि बाह्य संधि कहलाती है और वह वैकल्पिक होती है।

8.7 प. आइए, अब हम संस्कृत के कुछ और श्लोक पढ़ें।

क. **उद्यमेन[1] हि सिध्यन्ति[2] कार्याणि न मनोरथैः[3]।**
न हि सुप्तस्य[4] सिंहस्य[5] प्रविशन्ति[6] मुखे मृगाः[7]॥

ख. **विद्या विवादाय[8], धनं मदाय[9], शक्तिः परेषां[10] परिपीडनाय[11]।**
खलस्य[12], साधोः[13] विपरीतमेतत्[14] ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय[15]॥

ग. **अधमाः[16] धनमिच्छन्ति[17] धनं मानं च मध्यमाः[18]।**
उत्तमाः[19] मानमिच्छन्ति मानो हि महतां[20] धनम्॥

(**शब्दार्थ**:—1. परिश्रम से, 2. सिध्द होते हैं, 3. इच्छा मात्र से, 4. सोए हुए, 5. शेर के, 6. प्रविष्ट होते हैं, 7. हरिण, जानवर, 8. बहस के लिए, झगडे क़े लिए, 9. घमंड या गर्व के लिए, 10. दूसरों के, 11. दुख देने के लिए, 12. धूर्त व्यक्ति के, 13. सज्जन व्यक्ति के, 14. विपरीतम्-उलटे होते हैं, 15. रक्षा के लिए, 16. नीच लोग, 17. धन चाहते हैं, 18. मध्यम कोटि के लोग, 19. उत्तम कोटि के लोग, 20. महापुरुषों का)।

8.8 प. यहाँ विदेश में रहने वाले मित्र को लिखा गया एक साधारण पत्र दे रहे हैं। उसका मित्र पत्र में अपने परिवार का विवरण देता है जो भारत के किसी गाँव में रहता है।

मित्राय पत्रम्

प्रिय मित्र,

नमस्ते! अहम् एतत् पत्रं स्वग्रामात् लिखामि। पत्रेण सह मम ग्रामस्य चित्रम् अस्ति। अहम् अत्र वसामि। मम परिवारः अत्र अस्ति।

मम पिता कृषकः[1] अस्ति। तस्य क्षेत्रम्[2] अति विशालं न अस्ति। सः प्रातः क्षेत्रं गच्छति। सायं गृहम् आगच्छति। मम पिता अति उद्यमं करोति। तस्य द्वौ वृषभौ[3] स्तः। तौ क्षेत्रं कृषतः[4]। अस्माकम् एका गौः[5] अपि अस्ति। सा अस्मभ्यं दुग्धं यच्छति। वयं सर्वे तस्याः दुग्धं पिबामः।

मम माता गृहात् बहिः[6] कार्यं न करोति। सा गृहे तिष्ठति। सा अस्मभ्यं सर्वेभ्यः भोजनं पचति।

ग्रामं परितः विशालाः वृक्षाः सन्ति। अत्र एकः विद्यालयः अपि अस्ति। अहं प्रातः विद्यालयं गच्छामि। तत्र अहं पठामि, मित्रैः च सह क्रीडामि। मम भगिनी अपि मया सह विद्यालयं गच्छति। मम भ्राता नगरस्य महाविद्यालये[7] पठति।

अस्माकं ग्रामः नगरात् दूरे अस्ति। मम भ्राता बसयानेन[8] महाविद्यालयं गच्छति। वयमपि यदा-कदा बसयानेन नगरं गच्छामः।

कृषकस्य जीवनं कठिनम् अस्ति। किन्तु वयं प्रसन्नाः स्मः।

अधुना पत्रं समाप्तं करोमि।

तव मित्रम्
रमेशः

(**शब्दार्थ**:—1. किसान, 2. खेत, 3. बैल, 4. कृष्-कृषति-खेती करना, हल चलाना, 5. गाय, 6. बाहर, 7. कालेज में, 8. बस से, यानम्-गाड़ी।)

8.9 प. नीचे दिए गए वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

1. हमारे अध्यापक (एक व.) विद्यालय के लिए पुस्तकें ला रहे हैं। 2. मैं बाग से आ रहा हूँ। 3. ये चित्र तुम्हारे लिए हैं। 4. मैं ये फूल उन लड़कियों को दे रहा हूँ। 5. वह किसके साथ शहर जा रहा है? 6. वह वहाँ हमारे साथ जा रहा है। 7. हमारे अध्यापक हमारे ऊपर क्रोध नहीं करते। 8. आप (सब) अब क्या कर रहे हैं? 9. हम उनके साथ (पुं.) मंदिर जा रहे हैं। 10. क्रोध से मनुष्य का नाश हो जाता है।

अभ्यासों के उत्तर

8.2 1. दूध से हमारे शरीर पुष्ट होते हैं। 2. फलों से भी हमारे शरीर पुष्ट होते हैं। 3. हमारी माता हमें दूध देती है। 4. वह कभी भी हमारे ऊपर क्रोध नहीं करती। 5. प्रसन्न लड़कियाँ नाच रही हैं। 6. क्रोध क्रोध से शांत नहीं होता। 7. केवल अक्रोध (क्रोध न करने) से ही क्रोध शांत होता है। 8. यह बुध्द का कथन है। 9. परिश्रम से कार्य सिध्द होता है। 10. वे लड़के बहुत अधिक खेलते हैं, इसलिए वे थक जाते हैं। 11. कल यहाँ उत्सव है 12. लोग मंदिर जाते हैं। 13. पाप से मनुष्य का नाश हो जाता है। 14. पुण्य मनुष्य की रक्षा करता है। 15. पाप से दुख होता है। 16. पुण्य से सुख मिलता है। 17. मनुष्य धन से कभी तृप्त नहीं होता। 18. विद्यार्थियों के परिश्रम से अध्यापक प्रसन्न होते हैं।

8.4 1. मैं इस समय भोजन कर रहा हूँ। 2. तुम आज क्या कर रहे हो? 3. आज मैं उन लड़कों के साथ खेल रहा हूँ। 4. वह स्वभाव से शांत है। 5. वह क्रोध नहीं करता। 6. उसका भाई हमेशा क्रोध करता है। 7. वह इस समय क्या कर रही है? 8. वह खाना पका रही है। 9. आप लोग आज क्या कर रहे हैं? 10. हम लोग आज उन लड़कियों के साथ मंदिर जा रहे हैं। 11. हम जब पाप करते हैं तब दुःख का अनुभव करते हैं। 12. लोग जब पुण्य करते हैं तब उन्हें सुख मिलता है। 13. मैं भी जब पुण्य (अच्छे काम) करता हूँ तो मुझे सुख का अनुभव होता है। 14. जब मैं पाप करता हूँ तो दुःख का अनुभव होता है। 15. तुम दोनों अब क्या कर रहे हो? 16. हम दोनों अब पाठ पढ़ रहे हैं।

8.6 1. कदापि, 2. प्रसन्नोऽस्मि, 3. किमपि, 4. ममापि, 5. नास्ति, 6. बालको गच्छति, 7. कस्यायम्, 8. तवापमानः, 9. छात्रोऽस्ति, 10. परिचितो देशः।

8.7 क. हमारे सभी काम परिश्रम से पूरे होते हैं केवल इच्छा करने से कोई काम नहीं होता। सोए हुए शेर के मुख में जानवर स्वयं प्रविष्ट नहीं होते। (इसके लिए उसे प्रयत्न करना पड़ता है।)

ख. दुष्ट मनुष्य के लिए विद्या विवाद या झगड़े के लिए, धन घमंड के लिए और शक्ति दूसरों को कष्ट देने के लिए होती है इसके विपरीत सज्जन व्यक्ति के लिए विद्या ज्ञान के लिए, धन दान देने के लिए और शक्ति असहाय लोगों की रक्षा के लिए होती है।

ग. नीच मनुष्य धन पाना चाहते हैं, मध्यम कोटि के मनुष्य धन और मान दोनों पाना चाहते हैं तथा उत्तम कोटि के लोग मान पाना चाहते हैं। निश्चय से मान ही महापुरुषों का धन है।

8.8 मित्र का पत्र

प्रिय मित्र,

नमस्ते! मैं यह पत्र अपने गाँव से लिख रहा हूँ। पत्र के साथ मेरे गाँव का चित्र है। मैं यहाँ रहता हूँ। मेरा परिवार यहाँ है।

मेरे पिता जी किसान हैं। उनका खेत बहुत बड़ा नहीं है। वे सुबह खेत पर जाते हैं। शाम को घर आते हैं। मेरे पिताजी बहुत मेहनत करते हैं। उनके पास दो बैल हैं। वे खेत में हल चलाते हैं। हमारे पास एक गाय भी है। वह हमें दूध देती है। हम सब उसका दूध पीते हैं।

मेरी माताजी घर से बाहर काम नहीं करती। वह घर में रहती है। वह हम सब के लिए भोजन बनाती है।

गाँव के चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ हैं। यहाँ एक विद्यालय भी है। मैं सुबह विद्यालय जाता हूँ। वहाँ मैं पढ़ता हूँ और मित्रों के साथ खेलता हूँ। मेरी बहिन भी मेरे साथ विद्यालय जाती है। मेरा भाई शहर के कॉलेज में पढ़ता है।

हमारा गाँव शहर से दूर है। मेरा भाई बस से कॉलेज जाता है। हम भी कभी-कभी बस से शहर जाते हैं।

किसान का जीवन बहुत कठोर होता है। परन्तु हम प्रसन्न हैं।

अब पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा मित्र
रमेश

8.9 1. अस्माकम् शिक्षकः विद्यालयाय पुस्तकानि आनयति। 2. अहं वाटिकायाः आगच्छामि। 3. एतानि चित्राणि तुभ्यं सन्ति। 4. अहम् एतानि पुष्पाणि ताभ्यः बालिकाभ्यः यच्छामि। 5. सः केन सह नगरं गच्छति? 6. सः अस्माभिः सह तत्र गच्छति। 7. अस्माकं शिक्षकः अस्मभ्यं न कुप्यति। 8. यूयम् अधुना किं कुरुथ? 9. वयं तैः सह मन्दिरं गच्छामः। 10. क्रोधेन मनुष्यः नश्यति।